जब प्रश्न, उत्तर बन जाते हैं

श्री सिंह कुरियल

प्रश्न एक ऐसा ज़रिया है जो अवधारणाओं, परिस्थितियों और विचारों की हमारी समझ पर सवाल उठाता है। और इस बात पर कोई सवाल नहीं उठाया जा सकता। इस लेख में यही बताया गया है कि किंज़म खम्पा नामक एक शिक्षिका ने किस तरह से बच्चों को प्रश्नों के उत्तर ढूँढ़ने के लिए प्रेरित किया।

किंज़म अँग्रेज़ी भाषा की शिक्षिका हैं जो पाँच साल से शिक्षण कार्य कर रही हैं और इन दिनों उत्तरकाशी के जीआईसी पुजर गाँव में कार्यरत हैं। उन्हें इस निष्कर्ष तक पहुँचने के लिए किसी भारी-भरकम अकादमिक शोध पत्र को पढ़ने की ज़रूरत नहीं पड़ी। किंज़म में इस बात का जुनून था कि वे बच्चों को न केवल अँग्रेज़ी भाषा में बल्कि स्कूल के अन्दर और बाहर के सभी विषयों में कुशल बनाएँ और इसीलिए उन्होंने जल्दी ही प्रश्नों की शक्ति को पहचान लिया।

किंज़म की कक्षा में बच्चे रटने के अभ्यस्त थे। तो अकादमिक सत्र के शुरू के कुछ हफ़्तों तक तो वे यह देखकर बहुत ख़ुश हुईं कि बच्चे पाठों का जवाब कितनी अच्छी तरह से दे रहे हैं। लेकिन जल्द ही उनका उत्साह निराशा में तब्दील हो गया, जब उन्हें यह पता लगा कि बच्चे पाठ में दिए गए सरल शब्दों के अर्थ, उपयोग और अनुप्रयोग को नहीं समझते थे। उन्हें इस बात का एहसास भी हुआ कि पाठ्यपुस्तक तो अधिगम की प्रक्रिया को जारी रखने का साधन मात्र थी और उसे भी पूर्णतया आदर्श साधन नहीं माना जा सकता। उसके बाद उन्होंने कक्षा में प्रयोग करने शुरू किए। उन्होंने पाठ्यपुस्तक बन्द कर दी जिसे देखकर बच्चे हक्का-बक्का रह गए। और उन्होंने बच्चों से भी ऐसा ही करने को कहा।

पाठ्यपुस्तक का हर पाठ किसी थीम, विचार और/या धारणा का सूचक मात्र है। एक बार जब वह मूल विचार बच्चे तक पहुँच जाता है और वे उसे आत्मसात कर लेते हैं तो सब कुछ समझ में आ जाता है। और किंज़म ने यहीं से शुरुआत की।

उन्होंने कक्षा में अनेक बातों पर चर्चा शुरू की। फिर तो कक्षा में हर तरह के विषय, विचार और ख़्याल प्रवाहित होने लगे। बच्चों में सोच-विचार की प्रक्रियाओं को उजागर करने में बेशक उन्हें समय लगा लेकिन एक बार जब बच्चे गम्भीर रूप से विचार करने के अभ्यस्त हो गए तो बातचीत में रवानी आ गई और विचार फलने-फूलने लगे। सच पूछा जाए तो बच्चे शिक्षक से बात करने के आदी नहीं थे। इसके पहले उनसे सिर्फ़ बात की जाती थी, उन्हें कभी सुना नहीं जाता था। अब किंज़म ने अपना अकादमिक साल बातचीत के पाठ्यक्रम के साथ शुरू किया।

जब बच्चे अपने विचार प्रकट करने में सहजता महसूस करने लगे तो किंज़म ने प्रश्नों का खेल शुरू किया। पहले उन्होंने एक विषय दिया, उस पर चर्चा शुरू हुई, विचारों ने ठोस रूप लिया और तब उन विचारों पर सवाल किए गए। वे जानती थीं कि विचारों के बारे में यह पूछताछ बहुत नरमी से करनी चाहिए अन्यथा बच्चे फिर अपने में सिमट जाएँगे, वह बिलकुल नहीं चाहती थीं कि ऐसा हो। क्योंकि अगर ऐसा होता तो बच्चे समीक्षात्मक चिन्तन नहीं करते। इसलिए कभी-कभी एक सप्ताह या पूरा महीना किसी विशेष चर्चा से सम्बन्धित ऐसे प्रश्नों को चुनने में लग जाता जो अन्ततः पाठ्यपुस्तक के पाठों के मूल विचार तक ले जाएँ। इसका नतीज़ा यह हुआ कि जब बच्चे पाठ पढ़ना शुरू करते तो उसके पहले ही वे एक ऐसी तार्किक समझ से लैस हो गए होते थे जो बड़ी होशियारी से चुने गए प्रश्नों की झड़ी का सामना कर चुकी थी।

बच्चों को शिक्षक एवं एक-दूसरे से सवाल करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है। किंज़म का दृढ़ विश्वास है कि एक ऐसा सकारात्मक वातावरण बनाया जाना चाहिए जहाँ हर बच्चे की आवाज़ सुनी जाए और उसका सम्मान किया जाए।

धीरे-धीरे किंज़म समझ गईं कि अपने प्रश्नों के ख़ज़ाने के रूप में उन्हें एक शक्तिशाली हथियार मिल गया है। उन्होंने यह भी पाया कि पाठ्यपुस्तक में आमतौर पर ऐसे प्रश्न दिए जाते हैं जिनका उत्तर हाँ या नहीं में होता है (क्लोज़-एंड प्रश्न)। ऐसे प्रश्न समझ विकसित करने में सहायक नहीं होते। इनसे रट कर सीखने को प्रोत्साहन मिलता है और वह बिलकुल नहीं चाहती थीं कि ऐसा हो। उन्होंने कड़ी मेहनत करके प्रत्येक पाठ के लिए अपने ही प्रश्नों की सूची तैयार की। ये प्रश्न बच्चों की समझ का परीक्षण करते थे, बच्चों को पाठ से परे जाकर सोचने के लिए प्रोत्साहित करते थे और पाठ को बच्चे के सन्दर्भ से जोड़ते थे। पहली बार ऐसा हुआ कि जब प्रश्न चिह्न दोस्त बन गए!

इसके अलावा उन्होंने शुरुआती प्रश्न आसान ही बनाए और फिर कठिनाई के विभिन्न स्तरों वाले प्रश्न बनाए। इससे विद्यार्थियों की संज्ञानात्मक क्षमता के इस्तेमाल पर भी ज़ोर पड़ा। अनजाने में ही सही लेकिन वास्तव में किंज़म ब्लूम वर्गीकरण के अनुसार कार्य कर रही थीं और बच्चों को ज्ञान, समझ, उपयोग, विश्लेषण, संश्लेषण और मूल्यांकन जैसे साधनों से लैस करने की कोशिश कर रही थीं।

किंज़म जो कुछ कर रही हैं उसे लेकर उनके मन में यह बात स्पष्ट है कि जब बच्चे पाठ समझ लेंगे तो वे अँग्रेज़ी में पढ़ने (अर्थ समझते हुए),लिखने (मौलिक रूप से) और बोलने (बिना झिझके) में भी सक्षम हो जाएँगे।

वे मानती हैं कि प्रश्नों की वजह से बच्चों में समीक्षात्मक चिन्तन और बेहतर सम्प्रेषण कौशल का विकास हुआ है तथा उनके रचनात्मक कौशल में संवर्धन हुआ है। साथ ही वे अच्छे श्रोता भी बन गए हैं और यह सारी बातें उनकी कक्षा में साफ़ नज़र आती हैं जहाँ बच्चे आत्मविश्वास के साथ बातें करते हैं और प्रश्न पूछने से डरते नहीं।

हो सकता है कि किंज़म अपना पाठ्यक्रम समय पर समाप्त न कर पाएँ, लेकिन वे जानती हैं कि उनके बच्चे यह ज़रूर सीख जाएँगे कि तर्कसंगत तरीक़े से सवाल कैसे करें और यही बात उनके लिए सबसे बड़ा इनाम है।

यह लेख टीचर प्लस, मार्च 2018 के अंक में भी प्रकाशित हुआ है। (http://www.teacherplus.org/ profile/ when-questions-turn-into-answers)

श्री सिंह कुरियल अँग्रेज़ी के स्रोत व्यक्ति के रूप में कार्यरत हैं और उत्तरकाशी, उत्तराखण्ड के अज़ीम प्रेमजी फ़ाउण्डेशन में विषय आधारित शिक्षक-प्रशिक्षण में मदद करती हैं। वे बेहद गम्भीरता के साथ सरकारी स्कूलों का दौरा करती हैं और ज़मीनी स्तर पर द्वितीय भाषा अर्जन/ सीखने विशेष रूप से अँग्रेज़ी, के बारे में अपनी समझ को बेहतर बनाने का प्रयास करती हैं। उनसे shree.kuriyal@azimpremjifoundation.org पर सम्पर्क किया जा सकता है। **अनुवाद :** नलिनी रावल